डेली कॉलेज, जूनियर स्कूल

हिंदी सामूहिक कविता पाठ – 2018-19

शहीदों में तू नाम लिखा ले रे!

VI CIE

वह देश, देश क्या है, जिसमे
लेते हों जन्म शहीद नहीं।
वह खाक जवानी है जिसमें
मर मिटने की उम्मीद नहीं।

वह माँ बेकार सपूती है,
जिसने कायर सुत' जाया है।
वह पूत, पूत क्या है जिसने,
माता का दूध लजाया' है।

[illegible] आया तो इतरा जाना,
[illegible] तो कुम्हला' जाना।
[illegible] या कोई जीवन है
[illegible] फिर मर जाना।

पैदा हो तो फिर ऐसा हो,
जैसे तांत्या बलवान हुआ।
मरना हो तो फिर ऐसे मर,
ज्यों भगत सिंह कुरबान हुआ।

जीना हो तो वह ठान-ठान,
जो कुंवर सिंह ने ठानी थी।
या जीवन पाकर अमर हुई
जैसे झाँसी की रानी थी।

यदि कुछ [illegible] में जीवन है,
तो [illegible] राणा की।
दिल्ली [illegible] बहादुर की
और [illegible] नाना की।

तू बात याद कर मेरठ की,
मत भूल अवध की घातों[4] को।
कर सत्तावन के दिवस याद,
मत भूल गदर की बातों को।

आज़ादी के परवानों ने जब
ख़ूँ से होली खेली थी।
माता के मुक्त[5] कराने को
सीने पर गोली झेली थी।

तोपों पर पीठ बंधाई थी,
पेड़ों पर फाँसी खाई थी।
पर उन दीवानों के मुख पर,
रत्ती-भर शिकन[6] न आई थी।

वे भी घर के उजियारे[7] थे।
अपनी माता के बारे थे।
बहनों के बंधु[8] दुलारे थे,
अपनी पत्नी के प्यारे थे।

पर आदर्शों की खातिर जो
भर अपने जी में जोग[9] गए।
भारत माता की मुक्ति हेतु,
अपने शरीर को होम[10] गए।

कर याद कि तू भी उनका ही
वंशज[11] है, भारतवासी है।
यह जननी[12], जन्म-भूमि अब भी,
कुछ बलिदानों की प्यासी है।

अँगरेज़ गए जैसे-तैसे,
लेकिन अँगरेज़ी बाकी है।
उनके बुत छाती पर बैठे,
ज़हनियत[13] अभी वह बाकी है।

Scanned by CamScanner